International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 73-75

अनूप अशेष के नवगीतों की शैल्पिक श्रेष्ठताए

डॉ० बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

व्यवस्थापक और संपर्क अधिकारी, एम.पी. बिरला अस्पताल, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सरांश

अनूप अशेष के नवगीतों का वाचन एवं रसास्वादन करनें से नवगीतों की शैल्पिक श्रेष्ठताएं सर्वोत्तम रूप से उभरकर आती है। नवगीतों के एक संकलन की समीक्षा में शिल्प संबंधी चर्चा करते हुए साहित्यकारों ने अपने विचार व्यक्त किये कि–तुकांतो के नकार और मात्राओं के बाबजूद इन गीतों में लयबद्धता सम्पूर्णतः मौजूद रहती है। बढिया तुकांतों और गिनी–चुनी मात्राओं वाली पंक्तियॉ भी लयहीन हो सकती है, जिन्हें दर असल छंदहीन कहा जाना चाहिए। वास्तव में नवगीत की रूप पहचान तुकांत और सामाजिक छंदों पर ही आश्रित नहीं है, वरन् सच तो यह है कि उसके शिल्प स्तर पर आश्चर्यजनक विविधता मिलती है। साहित्य मंच पर नवगीत की प्रतिष्ठा के साथ ही नवगीत रचनाकारों की पंक्तियों में वृद्धि हुई है उसका एक प्रमुख कारण उसके शिल्प को साध्य मानकर ऐसे छंद की रचना करना जो तुक और मात्रात्मक वृत्त की रचना करता है। ऐसे रचनाकार काव्य की लयात्मकता से उतने ही अनजान है जितने मुक्त छंद के नाम पर गद्य अथवा कविता लिखने वाले काव्यकार है।

मूल शब्दः अनूप अशेष, शैल्पिक श्रेष्ठताए

प्रस्तावना

अनूप अशेष के नवगीत के शिल्प पर विचार किया जाये तो संगीतात्मकता छंद की मोहताज नहीं है। एक छंदहीन स्थिति में अपनी लयधर्मी ताकत से अपना नितांत भिन्न, भीतर अव्यक्त सा संगीत रूप पा लेती है और फिर अपनी एक निश्चित, गणितीय पहचान बनाती है। गणितीय पहचान जिसमें निश्चितता और वैज्ञानिकता निहित है। अतः गीत और कविता के भेंदों इत्यादि रूपों या उनके अन्तःसंबंधों पर से विचार होना चाहिए।

शिल्प संदर्भ में डॉ. नरेन्द्र सिंह फौजदार का वक्तव्य नवगीत की विशेष पहचान भाषा और शिल्प के अन्वेषण के कारण है। नवगीतकारों ने लोकभाषा से सीधे चुने गये शब्द गीतों के कत्य को उपयुक्त भूमि देते है। इस संबंध में डॉ. विजय बहादुर सिंह का कथन का कथन सटीक है – नवगीतकारों ने भाषा को गढने और विलक्षणता प्रदान करने बदले उसका अन्वेषण किया और अन्वेषण के साथ ही उसकी पूर्ण रचना में संलग्न हो गये। भाषा का यह अन्वेषण सम्पूर्ण भारतीय परिवेश को एक इकाई मानकार किया था इसलिए नवगीतों की भाषा में लोकबोलियों के शब्दों से लेकर आधुनिक नागरिक सभ्यता की शब्दावलियॉ तक मिलती है।

नवगीतकारों को लोकभाषा के तेवर की पहचान से लेकर मुहावरे, लोकोत्तियों से अंतरंग परिचय है। जनता की एकांत और सार्वजनिक बोली की पहचान, दुख तकलीफ को व्यक्त करने वाली भाषा, संकेत चिह्न,प्रतीक आस्था के प्रतीक, पौराणिक बिम्बों की आंचलिक व्याख्याएं तथा लोक जीवन के संदर्भो का गीतकार को बांध होना बहुत आवश्यक है। छंद योजना,शिल्प विधान का महत्वपूर्ण अंग है। भावारूप छंद योजना अनुभूति औरशैल्पिक समन्वय की सृष्टि करती है। भाषा, बिम्ब,शिल्प, छंद, लय,प्रतीक,बिम्बधर्मिता, चित्रात्मकता आदि गुणों के कारण नवगीत जन–जन का गीत बन गया है।

अनूप अशेष के नवगीत की विशेष पहचान भाषा और शिल्प के अन्वेषण के कारण है। नवगीतकारों ने लोकभाषा को आधार बनाया। लोकभाषा से सीधे चुने गये शब्द गीतों के कथ्य को उपर्युक्त भूमि देते है। इस सम्बंध में साहित्यकारों ने लिखा है कि–नवगीतकारों ने भाषा को गढने और विलक्षणता प्रदान करने के बदले उसका अन्वेषण सम्पूर्ण भारतीय परिवेश को एक इकाई मानकार किया। इसलिए नवगीतों की भाषा में लोक बोलियों के शब्दों से लेकर आधुनिक नागरिक सभ्यता की शब्दावलियॉ तक मिलती है।

अनूप अशेष के नवगीत को लोकभाषा के तेवर की पहचान से लेकर मुहावरे, लोकोक्तियों से अंतरंग परिचय है। जनता की एकांत और सार्वजनिक बोली की पहचान, दुःख–तकलीफ को व्यक्त करने वाली भाषा, संकेत, चिन्ह,प्रतीक, आस्था के प्रतीक पौराणिक बिम्बों की आंचलिक व्याख्याऍ तथा लोकजीवन के संदर्भो का गीतकार को बोध होना बहुत आवश्यक है। अधिकांश नवगीत सग्रंहों में प्रयुक्त संकेत, प्रतक पौराणिक मिथकों के माध्यक से लोक शिल्प की उसी पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास किया गया है, जिससे कथ्य की व्यंजना और भी धारदार और सम्प्रेष्य हो सकें। यहॉ यश मालवीय में कबीर वाली लोक शैली और फक्कडपन की मस्ती साफ झलकती है –

'राम लुभाया राम लुभाया/ जो जी में आया वो गया।
सीखा नहीं राम दरबारी/ भले नौकरी थी सरकारी।।'
(संदर्भ क्रं.1–उडान से पहले–यश मालवीय)

छंद योजना शिल्प विधान का महत्वपूर्ण अंग है। भावनुरूप छंद योजना अनुभूति औरशैल्पिक समन्वय की सृष्टि करती है। नवगीतों में छंद–प्रयोग का वैविध्य और नवता दोनों है। नवगीतकार छंद की आंतरिक लय और भाषा की कलय से सुपरिचित है। नवगीत में लयात्मकता और छंदबद्धता के सम्बंध मेंशंभुनाथ सिंह की कथन उल्लेखनीय है –'यों तो गीत माात्र का अस्तित्व लय अथवा नाद योजयना पर आधारित है , परन्तु नवगीत की विशेषता यह है कि उसमें लयात्मकता की नवीन संभावनाओं की खोज और उपलब्धि की गयी है। वह लयात्मकता को पूर्वज्ञान सीमाओं को अतिक्रमित करते छंद–सागर की नवीन और अछूती लहरों को पकडने में सफल सिद्ध हुआ है। उसने बदली हुई परिस्थितियों के लयात्मक स्पंदन को पकडकर उसे अपनी काव्याभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। इस तरह उसमें समकालीन युग जीवन के स्पंदन और संवेग का संगीत सुनाई पडता है। यही संगीत नवगीत की छांदसिक लयात्मकता है।'

छंद–वैविध्य और नवता की दृष्टि से नवगीत में मात्रिक छंदों यथा–चौपाई, दोहा, चतुमांत्रिक, पंचमात्रिक,षट्मात्रिक, नवमात्रिक छंदों का प्रयोग विशेष रूप से मिलता है लेकिन मार्मिक छंदो के साथ लोक धुनों पर आधारित गीत की नवगीतकारों ने लिखे है। आधुनिक जीवन दृष्टि एवं मानवीय नियति को चिंता के साथ गीत के परम्परागत छंदों और रूप विन्यास को तोडकर नयी तरह की गीत रचना को ही नवगीत का नाम दिया गया। नवगीत में लोकभाषा एवं लोकगीत की मिठास और लयात्मकता का अद्भुत समन्वय है।

'प्रभु के लालय म्हारी बोली जी, बोली जी,
सामना करूँ कैसे, चेहरे पर पानी जी–
म्हारी झोपडिया है, आपकी अटारी जी।
सुनो हो भितरिया जी ! सुनो हो पुजारी जी।'
(संदर्भ कं.–2, पहला दिन मेरे अषाढ का–नईम–पृ.क्र–138)

बिम्बधर्मिता या चित्रात्मकता नवगीत का प्राणतत्व है। बिम्ब अपनी सहज चित्रात्मकता से अर्थ की प्राप्ति को सहज और सहल बना देते है। नये कथ्य को प्रस्तुत करने में नवगीत में नये बिम्बों की खोज हुई। जीवन के यथार्थ से जुडने के कारण नवगीत में यर्थाथग्राही बिम्बों की रचना हुई। अनूप अशेष के नवगीत में अधिकांशतः चाक्षुष बिम्बों को प्रयोग हुआ है।
अनूप अशेष के नवगीतों में ऐंद्रिय बिम्ब, यथानाद, घ्राण स्पृश्य का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में है। एंद्रिय बिम्बों के अतिरिक्त वस्तुपरक बिम्ब, भाव बिम्ब, सामाजिक, ऐतिहासिक , पौराणिक , सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, पकृतिपरक एवं प्रतीकात्मक बिम्ब नवगीतों में सजीवता के साथ उपलब्ध है।
अनूप अशेष के नवगीत की भाषिक नवीनता, ताजगी, सांकेतिकता, सहजता, अकृत्रिमता, लोकोन्मुखता और प्रतीकात्मकता ही उसकी सर्वप्रथम पहचान है। अलंकारों के प्रयोग में स्वाभाविकता का निर्वाह हुआ है। इन्हीं विशेषताओं के कारण नवगीत जन–जन का गीत बन सका है। अतः वस्तुगत यथार्थ से रचनाकार जुडने, लोकभाषा और लोकशिल्प की सारवस्तु की अभिव्यक्ति से नवगीत ने निश्चय ही शिल्पता के नये आयामों से भरपूर है।
अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह नवोन्मेषशीलता दिखाई पडती है, प्रकृति, लोक–संस्कृति, विज्ञान, मिथ, संगीतशास्त्र इत्यादि विभिन्न स्रोतों के लिए गये (और गढे गये भी) नए लाक्षणिक प्रयोगो,मुहावरों, अप्रस्तुतों, बिम्बों और प्रतीकों वाली उनकी संगीतमय चित्रात्मक भाषा में। नवगीतकार परिवर्तित परिवेश एवं उससे उत्पन्न विसंगतियों को संवेदनशीलता के साथ चित्रित करता है। यथा–

'डबराई, सूखी है धार–धार,
नेवज की कनियॉ सूखे पठार,
वन के वन सारे निर्वृक्ष हुए
घर में हम निर्वासित यक्ष हुए
ठगुआ दुर्भिक्ष खडा मुँह बाए
भूखे चीटों की लम्बी कतार।'
(संदर्भ कं.3– बातों ही बातों में –नईम–पृ.क्रं–98)

नवगीतकारों ने न केवल निःशेष होती हुयी गीतधारा को वर्ण्य–विषय की दृष्टि से नये क्षितिज प्रदान किये बल्कि शिल्पिक उपकरणों को भी समृद्धि और सम्पन्नता प्रदान की। युगबोध के परिप्रेक्ष्य में छायावादी एवं छायावादोत्तर कलात्मक उपकरण की ओर अपनी निरर्थकता और शिथिलता को सिद्ध का चुके थे, तो दूसरी ओर उनके बासी, रूखे, दीमक से खाए हुए, शिथिल निरर्थक शिल्कि उपकरणों को नवगीतकार ने स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। कारण चाहे कुछ भी रहा हो किन्तु इतना निश्चित है कि 'इन नये गीतकारों के लिए अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए विधा का उतना महत्व नहीं हैं, जितना भीतर की ऊर्जा का।'
अतः अनुभूति की ज्यों की त्यों अभिव्यक्ति ने नवगीत को संक्षिप्तता के घेरे में आबद्ध कर दिया किन्तु यह संक्षिप्तता सचेतन और सजीव थी जो नवगीतों को वैशिष्ट्य स्वीकार किया जाता है। नवगीतों के विशिष्ट् वैशिष्ट्य का आधार है नवीन छंद–योजना, प्रतीक,विधान, बिम्ब विधान।

श्यथा– 'आज क्वारी हंसी
बूढी धूप सी ढलने लगी है।
और खामोशी
छतों पर नींद में चलने लगी।'
(संदर्भ कं.–4, सर्जना के पल– डॉ. ओम प्रकाश सिंह–पृ–16)

किसी भी काव्य–विधा का शिल्प–सौष्ठव उसके कथ्य का श्रृंगार होता है। श्रृंगार चाहे काव्य का हो, चाहे कामिनी का, एक सीमा तक ही रूप और सौंदर्य में वृद्धि करता है। साहित्य के आधुनिक काल में इस तत्य को सभी कवियों ने पहचाना है और रीतिकाल में जो कविता छंद विधान और अलंकारों के बोझा से दब गई थी तथा उसकी चमत्कारिकता के सामने भावात्मकता कुंठित हो गई थी, उसे आधुनिक युग में शिल्प के इस अतिरिक्त बोझ से मुक्त कर दिया गया। नई कविता ने तो शिल्प की चिंता बिल्कुल ही नहीं की।
गीत काव्य की पुरानी परम्परा में छांदसिक शिल्प का विशेष महत्व रहा है। नवगीत के शिल्प के विषय महत्व रहा है। नवगीत के शिल्प के विषय में विद्वानों की मान्यता यह है कि इसमें छांदसिक रचना में नई कविता का मिजाज भरने का प्रयास किया है और इसमें उसे सफलता मिली है।
काव्य की विविध विधाओं में गीत ही एक ऐसी विधा है जो न तो कवेल शिल्प के बल पर जीती है और न केवल भाव पर। गीत में दोंनों तत्वों का संशिष्ट रूप में रहना अनिवार्य है। राजेन्द्र गौतम के अनुसार–'काव्य रचना अति संशिलष्ट–प्रक्रिया है। उसके अन्तः और बाह्य पक्षों के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना न तो सरल है और न सार्थक है। ललित कलाओं की स्वरूप रचना का आधार केवल हस्तकौशल नहीं, बल्कि अन्तःप्रेरणाओं की सक्रियता भी उसमें विशेष रूप से रहती है। इसी से वस्तु न केवल अभिव्यक्ति के आकार को निश्चित करती है बल्कि स्वयं आकार बनकर अभिव्यक्त होती है, जिससे दोंनों में अभेद स्थापित होता है।'
इस कथन से यह सिद्ध होता है कि अनूप अशेष के नवगीतमें रूप, आकार, छंद और बिम्ब का उद्घाटन भाव से संशिलष्ट होकर प्रवाहित होते है। इनके नवगीत में तो यह स्थिति और भी अधिक व्याप्ति लिये होती है। इस स्थिति को स्वीकार करते हुए भी कुछ ऐसे तत्व है जो नवगीत की रचना–प्रक्रिया को समझने में सहायता कर सकते है। इन तत्वों को निम्नलिखित बिंदुओं में परखा जा सकता है।

1–शिल्प का काव्य शास्त्रीय पक्ष।
2–शिल्प का भाषाई पक्ष और।
3–बिम्ब, प्रतीक, मिथक और फेंटेसी।

काव्यशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उसमें रस निष्पत्ति के विविध रूपों का भी वर्णन होता है जो मूलतः काव्य के भावात्मक धरातल को उजागर करता है। परन्तु उसे उजागर करने के लिए जिन उपादानों और साधनों का उपयोंग में लिया जाता है। वे काव्य की रचना प्रक्रिया अंग होते है और उन्हें शिल्प की श्रेणी में लिया गया

है। अनूप अशेष के गीतिकाव्य में शिल्प के काव्य शास्त्रीय पक्ष के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं को आधार बताया जा रहा।

1–आकार का आधार।
2–छंद–आकार।
3–अलंकारिता के नये आयाम।

अर्थात् अनूप अशेष के नवगीतों में शिल्प की प्रधानता चहुमुखी होकर काव्य जगत में विखरित होती है। और समस्त साहित्य क्षेत्र में एक नयी पहचान को स्थापित करके नवगीतों को सम्मान के साथ उच्च स्थान की प्राप्ति कराते है।

संदर्भ ग्रंथ

1. उडान से पहले – यश मालवीय।
2. पहला दिन मेरे आषाढ का–नईम–पृ.–138।
3. बातों ही बातो में –नईम –पृ–98।
4. सर्जना के पल–डॉ. ओम प्रकाश सिंह–पृ.–16।